इकाई 36 क्षेत्रीय शक्तियों का उदय

इकाई की रूपरेखा

36.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- क्षेत्रीय राजनैतिक शक्तियों के उत्कर्ष के पूर्व की परिस्थितियों का उल्लेख कर सकेंगे;
- मुगल साम्राज्य के पतन के बाद उभरने वाले विभिन्न प्रकार के राज्यों पर प्रकाश डाल सकेंगे; और
- क्षेत्रीय शक्तियों की कार्यपद्धति और कमजोरियों को रेखांकित कर सकेंगे।

36.1 प्रस्तावना

इसके पूर्व की इकाई में हम 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुगल साम्राज्य के पतन की चर्चा कर चुके हैं। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्यों का उदय इस काल की महत्वपूर्ण घटना है। हालांकि समकालीन फारसी कृतियों और आरंभिक अंग्रेज इतिहासकारों में इस पहलू को नजरअंदाज करने की प्रवृत्ति मिलती है। उनका उद्देश्य मुगल साम्राज्य के पतन को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाना और ब्रिटिश शासन की स्थापना का गुणगान करना है। 18वीं शताब्दी पर हुए समकालीन शोधों से इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ कि 18वीं शताब्दी के भारत का अध्ययन एक साम्राज्य के पतन या औपनिवेशिक शासन के आरंभ के रूप में नहीं किया जाना चाहिए बल्कि इस काल पर इनसे हटकर विचार किया

जाना चाहिए। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस इकाई में अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में क्षेत्रीय राजनैतिक शक्तियों के उदय के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जाएगा।

36.2 क्षेत्रीय शक्तियों के उदय संबंधी ऐतिहासिक दृष्टिकोण

मुगल प्रशासनिक व्यवस्था पर विचार करते हुए (खंड 4) हमने मुगलकालीन प्रांतीय प्रशासन व्यवस्था की व्याख्या की थी। स्वतंत्र क्षेत्रीय शक्तियों के विकास के संदर्भ में 18वीं शताब्दी के दौरान मुगल प्रांतीय राजनैतिक व्यवस्था की बनावट को समझना आवश्यक है। इससे हमें क्षेत्रीय शक्तियों के उदय की प्रवृत्ति और इस प्रकृति को पहचानने में मदद मिलेगी। मुगल शासन की प्रकृति केंद्रोन्मुख थी। कुलीनों, जमींदारों, जागीरदारों और प्रांतीय पदाधिकारियों को अधीनस्थ रखने में ही सम्राट और साम्राज्य की सफलता निहित थी। वस्तुत: यहां सम्राट (जो हमेशा मजबूत स्थिति में होता था) और अन्य शक्तियों के बीच हितों और आकांक्षाओं का संतुलन और समन्वय होता था। यह कहा जाता है कि औरंगजेब की मृत्यु के बाद स्थिति में परिवर्तन होने लगा। कई कारणों से मुगल सम्राट की शक्ति क्षीण होती गई।

दीवान (राजस्व प्रशासन का प्रमुख) और **नाजिम** (सूबेदार या कार्यकारी प्रधान) दो सर्वप्रमुख अधिकारी थे। दोनों को सीधे सम्राट नियुक्त करता था और उनके द्वारा प्रांतों पर नियंत्रण रखा जाता था। इसके अतिरिक्त **आमिल, फौजदार, कोतवाल,** आदि जैसे पदाधिकारी भी सम्राट द्वारा ही नियुक्त किए जाते थे। प्रांतीय गवर्नर भी सम्राट की कृपा पर ही अपने पद पर बने रहते थे। इस प्रकार नियुक्तियों पर नियंत्रण रख सम्राट अप्रत्यक्ष रूप से प्रांतीय प्रशासन पर नियंत्रण रखता था।

दुर्भाग्यवश केंद्रीय प्रशासन में हमेशा वित्तीय संकट बना रहा और कुलीन आपसी गुटों के संघर्षों में उलझे रहे। इस परिस्थिति में सम्राट इस संकट को रोक नहीं पाए। वह प्रांतीय गवर्नरों को अपेक्षित संरक्षण प्रदान करने में भी नाकाम रहे। इसके परिणामस्वरूप 18वीं शताब्दी के आरंभ में ये प्रांतीय गवर्नर अपनी स्वतंत्र शक्ति विकसित करने का आधार खोजने लगे। इस प्रवृत्ति का संकेत इस तथ्य से मिलता है कि वे सम्राट की पूर्व अनुमति के बिना ही स्थानीय नियुक्तियाँ करने लगे थे और प्रांतों में वंशगत शासन की स्थापना का प्रयत्न करने लगे। इस काल के दौरान मुगल सम्राट के प्रति वे सैद्धांतिक रूप से समर्पित रहे और नजराने भेजते रहे पर इन प्रांतीय गवर्नरों ने वस्तुत: प्रांतों पर अपनी स्वतंत्र सत्ता कायम कर ली थी। यहां तक कि दक्खन, राजपूताना, आदि जैसे स्वायत्त राज्यों (जो मुगलों के सीधे नियंत्रण में नहीं थे पर मुगल सत्ता को स्वीकार करते थे) ने भी साम्राज्य से संबंध विच्छेद कर लिया। 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुगलों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नियंत्रण वाले प्रांतों में स्वतंत्रता की आकांक्षा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही थी। इस काल में उदित होने वाले राज्यों को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

- मुगल साम्राज्य से अपने को पृथक कर के बने स्वतंत्र राज्य;
- मुगलों के खिलाफ विद्रोहियों द्वारा स्थापित नए राज्य; और
- स्वतंत्र राज्य।

आगे आने वाले भागों में हम इन राज्यों पर संक्षेप में विचार करेंगे।

36.3 उत्तराधिकारी राज्य

अवध, बंगाल और हैदराबाद उत्तराधिकारी राज्य की श्रेणी में आते हैं। ये तीनों प्रांत प्रत्यक्ष रूप में मुगल प्रशासन के नियंत्रण में थे। इन राज्यों ने मुगल सम्राट की प्रभुसत्ता को चुनौती नहीं दी पर इनके गवर्नरों

ने व्यावहारिक तौर पर स्वतंत्र और वंशगत सत्ता की स्थापना की और उस क्षेत्र के सभी पद और अधिकारी उसके नियंत्रण में आ गए। यह सब इन राज्यों में स्वायत्त राजनैतिक शक्तियों के उदय की ही अभिव्यक्ति थी। वृहद् मुगल संस्थागत ढाँचे के तहत एक नई राजनैतिक व्यवस्था का उदय हुआ।

36.3.1 अवध

सआदत खाँ 1722 ई. में अवध का **सूबेदार** बना। वह साम्राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की आकांक्षा रखता था। अपनी इस योजना में असफल होने के बाद उसने अवध को स्वतंत्र राजनैतिक शक्ति के रूप में उभारना शुरू किया। मुगल साम्राज्य की शक्ति के ह्रास से उसे अपनी इच्छा पूरी करने का मौका मिल गया। अवध का **सूबेदार** बनने के बाद उसे अवध के स्थानीय सरदारों और राजाओं के विद्रोहों का सामना करना पड़ा। अपनी स्थिति मजबूज करने के लिए उसने निम्नलिखित कदम उठाए :

- स्थानीय **जमींदारों** और स्वायत्त सरदारों के विद्रोहों को दबाना;
- **मदद-ए माश** प्राप्तकर्ताओं की शक्ति और अधिकारों में कमी करना;
- राजस्व वसूली को नियमित करना; तथा
- कुछ स्थानीय **जमींदारों** के साथ समझौता।

स्थानीय पदाधिकारियों को नियुक्त करते समय उसने केवल उनकी व्यक्तिगत वफादारी को ध्यान में रखा। जैसे ही उसने सम्राट की पूर्व अनुमति के बिना अपने दामाद सफदर जंग को उप-गवर्नर नियुक्त किया वैसे ही उसका उद्देश्य स्पष्ट हो गया।

सआदत खाँ के बाद सफदर जंग ने उसके पथ का अनुगमन किया ताकि प्रांतीय प्रशासन संभालने के लिए उसे सम्राट की तरफ न देखना पड़े। यहां तक कि दिल्ली को भेजा जाने वाला राजस्व भी अनियमित हो गया। अभी भी मुगल सम्राट के प्रति समर्पण का भाव मौजूद था पर 1739 और 1764 के बीच वस्तुत: अवध एक स्वायत्त राज्य के रूप में उभरकर सामने आया। सफदर जंग ने अपना नियंत्रण गंगा के मैदानी इलाकों तक बढ़ा लिया और रोहतास और चुनार के किलों पर नियंत्रण के साथ-साथ इलाहाबाद की **सूबेदारी** भी हासिल कर ली। केंद्रीय **दीवान** का पद समाप्त कर दिया गया। उसके उत्तराधिकारी शुजाउद्दौला ने भी अवध में स्वायत्त राजनैतिक व्यवस्था का आधार मजबूत करने का प्रयत्न किया। स्वायत्त राज्य की स्थापना के क्रम में एक उल्लेखनीय घटना यह घटी कि अवध के शासक के प्रति निष्ठा रखने वाले लोग समृद्ध हुए, जबकि मुगल सम्राट के प्रति निष्ठा रखने वाले लोगों की स्थिति खराब रही।

36.3.2 बंगाल

बंगाल में मुर्शीद कुली खाँ ने स्वायत्तता की प्रक्रिया शुरू की। उसे पहले **दीवान** नियुक्त किया गया पर बाद में राजस्व प्रशासन में उसकी सफलता और औरंगजेब की मृत्यु के बाद फैली अनिश्चितता के कारण उसे बंगाल की **सूबेदारी** प्राप्त हो गई। मुर्शीद कुली खां ने **दीवान** और **नाजिम** का पद मिलाकर एक कर दिया। उसने सबसे पहले राजस्व प्रशासन पर ध्यान दिया और इसे सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए :

- छोटे बिचौलिए **जमींदारों** का खात्मा;
- विद्रोही **जमींदारों** और **जागीरदारों** का उड़ीसा के सीमांत प्रांतों में निष्कासन;
- राजस्व वसूल करने और भुगतान करने का उत्तरदायित्व ग्रहण करने वाले बड़े **जमींदारों** को प्रोत्साहन; और
- **खालिसा** भूमि का विस्तार।

India in C.1750
Kabul
AFGHANISTAN
Peshawar
KASHMIR
PUNJAB
MOGUL
Delhi
Rohil-khand
NEPAL
BHUTAN
SIND
RAJPUT
Ajmer
Jaipur
Jodhpur
Agra
Lucknow
AVADH
Gwalior
Allahabad
BIHAR
Patna
MARATHA
TERRITORY
GUJARAT
Baroda
Diu
Surat
Daman
Bassin
Bombay
Nagpur
BERAR
BENGAL
Chandernagar
Calcutta
ORISSA
Cuttack
NIZAM
Hyderabad
Arabian Sea
Bay of Bengal
Yanaon
Masulipatam
Goa
MYSORE
Mysore
Mahe
Calicut
TRAVANCORE
CARNATIC
Madras
Pondicherri
Ft.St. David
Devi Kota
Karikal
Index
Portuguese
British
French

अपने इन कार्यों से मुर्शीद कुली ने इन **जमींदारों** को प्रांत में एक शक्तिशाली राजनैतिक शक्ति के रूप में उभरने का मौका दिया। इसी प्रकार धनी और व्यापारी वर्ग को नवाब से प्रोत्साहन मिला और स्थानीय राजनीति में उन्होंने अपनी पहचान स्थापित कर ली। ये सभी गतिविधियां मुर्शीद कुली खां द्वारा बंगाल में अपना प्रभुत्व स्थापित करने की कुछ अभिव्यक्तियाँ थी। उसने अपने नाती सरफराज को अपना उत्तराधिकारी भी मनोनीत कर दिया। इस प्रकार उसने बंगाल में वंशगत शासन की परम्परा की शुरुआत कर दी। सरफराज को उसके पिता शुजाउद्दीन मौहम्मद खां ने पदच्युत कर दिया। शुजाउद्दीन ने मुर्शीद कुली द्वारा विकसित व्यवस्था का ही पालन किया और स्थानीय शक्ति समूहों के साथ व्यक्तिगत निष्ठा के संबंध बनाने का प्रयत्न किया। दिल्ली से उसका संबंध नजराना भेजने तक ही सीमित रह गया। दूसरे शासक अलीवर्दी खां ने सरफराज खां को मारकर गद्दी हथिया ली। अलीवर्दी के शासनकाल में स्वायत्तता और बढ़ी। मुगल शासक की परवाह न करते हुए वह प्रांतीय स्तर पर महत्वपूर्ण नियुक्तियां करने लगा। उसने अपने विश्वस्त व्यक्तियों को पटना, कटक और ढाका का उपनवाब नियुक्त किया। उसने राजस्व प्रशासन में बड़ी संख्या में हिंदुओं को नियुक्त किया और एक मजबूत सैन्य शक्ति का निर्माण किया। दिल्ली को भेजा जाने वाला नजराना भी अनियमित हो गया। अलीवर्दी के समय तक बंगाल, बिहार और उड़ीसा को मिलाकर एक प्रशासनिक व्यवस्था कायम हुई जिसने दिल्ली दरबार से अपना संबंध कम कर लिया और इस प्रकार पूर्वी भारत में एक स्वतंत्र राज्य का उदय हुआ।

36.3.3 हैदराबाद

अवध और बंगाल की तरह हैदराबाद में भी मुगल साम्राज्य की केंद्रीय सत्ता के कमजोर पड़ते ही दक्खन के **सूबेदार** को स्वायत्त राज्य स्थापित करने का आधार प्राप्त हो गया। निजाम उल मुल्क ने मुगलों द्वारा नियुक्त पदाधिकारियों को हटाकर और अपने आदमियों को नियुक्त कर हैदराबाद पर नियंत्रण स्थापित किया। उसने संधि और युद्ध करने तथा मनसब और उपाधियां देने का अधिकार प्राप्त कर लिया। अब मुगल सत्ता के नाम पर मात्र प्रतीकात्मक खुतबा पढ़ा जाता था। इस काल के दौरान राजस्व व्यवस्था में सुधार लाया गया, **जमींदारों** को दबाया गया और हिंदुओं के प्रति सहिष्णुता का भाव अपनाया गया। हैदराबाद में जमीन से जुड़े बिचौलियों को प्रोत्साहित किया गया और उन्होंने राज्य की राजनीति में प्रमुख भूमिका अदा की। राजनैतिक संतुलन स्थापित करने में बैंकरों, ऋणदाताओं और सैनिक अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी क्योंकि वे ही अनिवार्य वित्तीय और सैनिक सेवाएँ प्रदान करते थे। इस प्रकार निजामउलमुल्क के शासनकाल में हैदराबाद एक स्वतंत्र राज्य के रूप में विकसित हुआ और सम्राट के साथ नाममात्र का संबंध रह गया। उसके उत्तराधिकारियों को मराठों और यूरोपीय कम्पनियों से कड़ा संघर्ष करना पड़ा और वे ज्यादा दिन तक अपनी स्वायत्तता कायम न रख सके।

36.4 नये राज्य

क्षेत्रीय राज्यों की दूसरी श्रेणी में ऐसे नए राज्य शामिल हैं जिन्होंने मुगल सत्ता का विरोध कर अपने को स्थापित किया।

36.4.1 मराठा

इस काल में उभरने वाले प्रांतीय राज्यों में मराठा राज्य का स्थान प्रमुख है। मराठों का उदय एक तरफ मुगल केंद्रीकरण के विरुद्ध क्षेत्रीय प्रतिक्रिया का परिणाम था तो दूसरी ओर यह विशेष वर्गों और जातियों की उच्च वर्गों में अपने उच्चस्थ बढ़ोतरी की इच्छा का परिणाम। मराठों के केन्द्रीय क्षेत्र पर कभी भी मुगलों का पूर्ण नियंत्रण स्थापित नहीं हो सका। पेशवा बाला जी विश्वनाथ के समय पेशवा का पद बहुत शक्तिशाली हो गया और मराठा राज्य को प्रमुख विस्तारवादी राज्य का दर्जा प्राप्त हो गया। बाला जी विश्वनाथ से लेकर बालाजी राव के शासनकाल तक मराठा शक्ति अपने उत्कर्ष पर पहुंच गयी और मराठा उत्तर, दक्षिण, पूर्व और मध्य भारत चारों ओर फैल गए। पानीपत की तीसरी लड़ाई में 1761 ई. में अफगानों ने मराठों को हरा दिया। इससे मराठा शक्ति को गहरा धक्का पहुंचा और उनका विजय अभियान रुक गया। प्रशासनिक दृष्टि से पूरा क्षेत्र नियंत्रित और गैर-नियंत्रित इलाकों में बंटा था।

गैर-नियंत्रित इलाकों में **जमींदारों** और सरदारों को प्रशासन चलाने की छूट मिली हुई थी पर उन्हें पेशवा को नियमित रूप से नजराना पेश करना होता था। नियंत्रित इलाकों पर मराठों का प्रत्यक्ष नियंत्रण था। इन इलाकों में भू-राजस्व के मूल्याकंन, प्रबंधन और वसूली व्यवस्था का विकास किया गया। नई व्यवस्था में **वतन** व्यवस्था सर्वप्रमुख थी। **वतनदार** का भूमि पर वंशगत अधिकार होता था और यह अधिकार किसी एक व्यक्ति के पास नहीं बल्कि पूरे कुटुम्ब के पास होता था (विस्तार के लिए इकाई 19 पढ़िए)। मराठों ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के कुछ हिस्सों को ग्रहण किया। उनका मुख्य ध्यान अधिशेष की प्राप्ति पर केंद्रित होता था। सुपरिभाषित प्रांतीय सत्ता के अभाव में वे अपने प्रभाव को सुदृढ़ करने में असफल रहे।

36.4.2 पंजाब

पंजाब का विकास अन्य क्षेत्रों से अलग ढंग पर हुआ। लाहौर के गवर्नर जकरिया खाँ ने पंजाब में स्वतंत्र राजनैतिक व्यवस्था की स्थापना का प्रयत्न किया। पर सिखों के स्वतंत्र राजनैतिक सत्ता के लिए संघर्ष के कारण वह असफल रहा। सिख आंदोलन की शुरुआत गुरूनानक ने की थी। आरंभ में यह धार्मिक विश्वासों में सुधार और सिख समुदाय में बंधुत्व की भावना को मजबूत करने तक सीमित था, पर 18वीं शताब्दी के दौरान यह राजनैतिक आंदोलन में बदल गया। सिखों ने अपने को छोटे और तीव्रगामी जत्थों में संगठित किया और मुगल साम्राज्य के लिए गंभीर चुनौती पैदा कर दी। विदेशी आक्रमण (ईरानी और अफगान), मराठा आक्रमण और प्रांतीय प्रशासन के आंतरिक तनावों के कारण पंजाब की हालत काफी अनिश्चित हो गई और इससे सिखों को अपना आधार मजबूत करने की छूट मिली। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विभिन्न **सिख** समुदायों ने कई स्थानीय सरदारों के नेतृत्व में अपने को 12 बड़े संघों या **मिस्लों** में पुनर्गठित किया। 19वीं शताब्दी के आरंभ में रंजीत सिंह के नेतृत्व में एक स्वायत्त सिख राज्य की स्थापना की प्रक्रिया पूरी हुई।

36.4.3 जाट राज्य

जाट कृषक जाति के थे और दिल्ली तथा आगरा क्षेत्र के निवासी थे। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मुगल साम्राज्य को कई कृषि आधारित वर्गों के विद्रोहों का सामना करना पड़ा था, उनमें जाटों का आंदोलन महत्वपूर्ण था। समकालीन प्रवृत्ति का अनुगमन करते हुए जाटों ने भी अपने स्वतंत्र क्षेत्र या राज्य की स्थापना का प्रयत्न किया। चूड़ामन और बदन सिंह ने इसमें पहल की पर सूरजमल ने 1756 और 1763 के बीच भरतपुर में जाट राज्य की स्थापना कर इसे मजबूती प्रदान की। यह राज्य पूर्व में गंगा, दक्षिण में चम्बल, उत्तर में दिल्ली और पश्चिम में आगरा तक फैला हुआ था। राज्य की प्रकृति सामंती थी और प्रशासनिक तथा राजस्व मामलों पर **जमींदारों** का पूर्ण नियंत्रण था। सूरजमल की मृत्यु के बाद यह राज्य ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाया।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित का मिलान कीजिए :

i)	सआदत खाँ	(1)	बंगाल
ii)	जकरिया खाँ	(2)	हैदराबाद
iii)	मुर्शीद कुली खाँ	(3)	भरतपुर
iv)	सूरजमल	(4)	अवध
v)	निजाम उल मुल्क	(5)	पंजाब

2) निम्नलिखित को परिभाषित कीजिए :

जत्था ....

मिस्ल ....

वतनदार ....

36.5 स्वतंत्र राज्य

राज्यों की तीसरी कोटि में स्वतंत्र राज्यों का स्थान आता है। मूलत: इन राज्यों का उदय केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने और क्षेत्रीय राज्यों पर इनकी पकड़ ढ़ीली होने के कारण हुआ।

36.5.1 मैसूर

मैसूर राज्य हैदराबाद के दक्षिण में अवस्थित था। हैदराबाद की तरह मैसूर मुगलों के सीधे नियंत्रण में नहीं था। मैसूर पहले विजयनगर साम्राज्य का अधीनस्थ राज्य था, बाद में वोडियार राजवंश ने यहां स्वायत्त राज्य की स्थापना की। 18वीं शताब्दी के दौरान हैदरअली और टीपू सुल्तान ने वोडयार शासकों को पदच्युत कर राज्य की स्वायत्तता को मजबूत किया। आरंभ में मैसूर पर एक तरफ मराठों का खतरा मंडरा रहा था और दूसरी तरफ हैदराबाद और कर्नाटक की तरफ से संकट थे, अंग्रेज भी मौके की तलाश में बैठे हुए थे। मैसूर सेना के कनिष्ठ पदाधिकारी के रूप में अपना जीवन शुरू करके हैदरअली इसका कुशल सेनानायक बन गया। उसने आधुनिक सेना के महत्व को ठीक से पहचाना और यूरोपीय सेना के ढंग पर मैसूर की सेना का आधुनिकीकरण किया। फ्रांसीसियों की सहायता से उसने सेना में संगठनात्मक अनुशासन स्थापित करने की कोशिश की। 1761 ई. तक उसने मैसूर राज्य के वास्तविक सत्ताधारी, मंत्री ननराज को पदच्युत कर दिया। उसने मैसूर की सीमा में विस्तार किया और मराठों, हैदराबाद और अंग्रेजों की दुश्मनी मोल ली। 1769 ई. में ब्रिटिश सेना ने हैदर को पराजित कर दिया। पर संघर्ष जारी रहा। 1782 ई. में उसकी मृत्यु के बाद 18वीं शताब्दी के अंत तक टीपू सुल्तान ने अपने पिता के संघर्ष को जारी रखा।

36.5.2 राजपूत राज्य

राजपूत शासकों ने भी अपनी स्वतंत्र राजनैतिक सत्ता स्थापित करने की कोशिश की। पड़ौसियों का राज्य हड़पकर उन्होंने अपने राज्य का विस्तार किया। मेवाड़, मारवाड़ और आमेर, जैसे राजपूत राज्यों ने मुगल साम्राज्य के खिलाफ गठबंधन कर लिया। पर राजपूतों की आपसी लड़ाई के कारण उनकी शक्ति कमजोर हुई। राजपूत राजाओं में जोधपुर के अजीत सिंह और जयपुर के जयसिंह सर्वप्रमुख हैं।

36.5.3 केरल

18वीं शताब्दी के आरंभ में केरल स्थानीय सरदारों और राजाओं के अधीन छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। पर 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यह सब केरल, कोचीन, ट्रावणकोर और कालिकट जैसे महत्वपूर्ण राज्यों में समाहित हो गए। हैदरअली के अधीन मैसूर के विस्तार के कारण केरल मुश्किल परिस्थिति में पड़ गया। हैदरअली ने वस्तुत: मालाबार और कालिकट को अपने राज्य में मिला लिया। हैदरअली के आक्रमण से ट्रावणकोर बचा रहा। यह एक महत्वपूर्ण राज्य था। इसके राजा मार्तण्ड वर्मा ने ट्रावणकोर राज्य की सीमा कन्याकुमारी से कोचीन तक फैला दी। उसने पश्चिम के ढंग पर सेना को संगठित करने का प्रयास किया और राज्य के विकास के लिए कई प्रकार के प्रशासनिक कदम उठाए।

36.6 क्षेत्रीय शक्तियों की प्रकृति

विभिन्न क्षेत्रों में स्वायत्त राजनैतिक व्यवस्था का अलग-अलग ढंग से विकास हुआ। कुछ इलाकों में मुगल गवर्नरों ने अपने नियंत्रण क्षेत्र में स्वायत्त सत्ता की स्थापना की (जैसे बंगाल, अवध और हैदराबाद)। मराठा, सिख और जाट राज्यों की स्थापना मुगल साम्राज्य की सत्ता के विरुद्ध संघर्ष का नतीजा थी। मैसूर, राजपूताना और केरल पहले से ही अर्द्ध-स्वतंत्र थे। इन राज्यों का विकास जैसे भी हुआ हो, इन सबने अपनी अलग प्रशासनिक व्यवस्था कायम करने का प्रयत्न किया। उदाहरण के लिए हैदराबाद और मैसूर दोनों दक्षिण में स्थित थे, पर हैदराबाद सीधे मुगलों के नियंत्रण में था और मैसूर पर वोडियार

शासकों का नियंत्रण था। दोनों राज्यों में स्वायत्त प्रशासनिक व्यवस्था का विकास हुआ पर उनकी कार्यपद्धति अलग थी। मैसूर में सेना के संगठन को मजबूत करने पर बल दिया गया और स्थानीय सरदारों के नियंत्रण और शक्ति को दबाकर राज्य की वित्तीय स्थिति सुधारने की कोशिश की गई। पर हैदराबाद में स्थानीय सरदारों को नहीं छेड़ा गया। सेना के संगठन और राज्य के लिए राजस्व वसूल करने के तरीकों में भी अंतर था। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रीय शक्तियों ने भी अपने संस्थागत ढांचे खड़े किए और प्रशासन चलाने के लिए कई स्थानीय संस्थाओं का उपयोग किया। इन विभिन्नताओं के बावजूद 18वीं शताब्दी के दौरान क्षेत्रीय शक्तियों की कार्यपद्धति में कुछ समान विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

प्रांतों में उभरनेवाली स्वतंत्र राजनैतिक व्यवस्था ने मुगल सत्ता से अपना संबंध बनाए रखा। हालांकि मुगल सम्राट का प्रांतीय प्रशासन पर कोई नियंत्रण नहीं रह गया था। पर अभी यह प्रांतीय राज्यों के लिए छत्रछाया के रूप में कार्य कर रहा था। नव उदित क्षेत्रीय शक्तियों ने उसके इस महत्व को स्वीकार किया। यहां तक कि मराठों और सिखों के विद्रोही सरदारों ने भी कभी-कभी मुगल सम्राट को सर्वोच्च सत्ता के रूप में स्वीकार किया। निस्संदेह प्रत्येक राज्य ने अपनी प्रशासनिक व्यवस्था और सेना को अपनी जरूरत के अनुसार पुनर्व्यवस्थित किया, पर इन राज्यों ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था को ही ग्रहण किया। बंगाल, अवध और हैदराबाद में मुगल गवर्नरों द्वारा स्वतंत्र सत्ता कायम की गयी थी। अत: यहां स्वाभाविक रूप से मुगल प्रशासनिक व्यवस्था का पालन किया गया। यहां तक कि मराठा राज्यों ने भी प्रशासन में मुगल पद्धति ही अपनाई। हालांकि इस संदर्भ में यह ध्यान रखना चाहिए कि कई मुगल संस्थायें तो जारी रहीं परंतु मुगल राजनैतिक व्यवस्था का अंत हो गया। 18वीं शताब्दी में विकसित राजनैतिक व्यवस्था अपनी प्रकृति में क्षेत्रीय थी। इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता है जिससे यह कहा जा सके कि इन क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्थाओं की मूलभूत विशेषताएँ मुगलों से भिन्न थीं।

18वीं शताब्दी में उभरी क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्था ने **जमींदारों**, व्यापारियों, स्थानीय कुलीनों और सरदारों, जैसे विभिन्न स्थानीय समूहों के साथ मिलकर कार्य किया। 18वीं शताब्दी में केन्द्रीय सत्ता कमजोर पड़ने और मुगल राजकोष के खाली हो जाने पर व्यापारियों ने क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्था के उदय और कार्य संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कुलीनों और शासकों को आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान की और इस प्रकार प्रशासन में उनका स्थान महत्वपूर्ण हो गया। उदाहरण के लिए बनारस के अग्रवाल बैंकर राजस्व मामलों पर नियंत्रण रखते थे। इसी प्रकार बंगाल में जगत सेठ घराने ने सत्ता की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाई। केन्द्रीय सत्ता के अभाव में व्यापारियों के समान **जमींदार** और स्थानीय सरदार अपने क्षेत्र की जनता के संरक्षक के रूप में उभरे। अपने अपने नियंत्रण क्षेत्र में **जमींदार** राजस्व और न्यायिक दोनों प्रशासन देखते थे। आम आदमी इन **जमींदारों** की कृपा पर निर्भर था। स्वाभाविक रूप में इस नव निर्मित क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्था में इन **जमींदारों** को जबरदस्त स्थानीय आधार प्राप्त था। अपनी शक्ति को बनाये रखने के लिए ये प्रांतीय शासक इन कतिपय स्थानीय हितों का ध्यान रखते थे। कुछ अपवाद भी मौजूद थे। उदाहरण के लिए मैसूर के शासक स्थानीय सरदारों को महत्व नहीं देते थे और अपनी मजबूत सेना और राजस्व पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर उन्होंने इन्हें पूर्णत: दरकिनार कर दिया। पर आमतौर पर 18वीं शताब्दी के दौरान क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्था के प्रशासन में इन स्थानीय समुदायों की निर्णायक भूमिका रही है। इसे क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है। इससे पता चलता है कि प्रांतीय शासक सुदृढ़ वित्तीय, प्रशासनिक और सैन्य संगठन की स्थापना नहीं कर पाए थे। अत: उन्हें स्थानीय समुदायों के सहयोग और सहायता पर निर्भर रहना पड़ता था। यह क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्था के प्रशासन की सबसे बड़ी कमजोरी थी और इसी कारण यहाँ स्थाई राजैनतिक व्यवस्था कायम न हो सकी। इसके अलावा ये क्षेत्रीय राज्य हमेशा अपने पड़ौसी राज्यों से लड़ते रहते थे। खासकर मराठों और दक्षिणी राज्यों के बीच अपने राज्यों की सीमाओं के विस्तार के लिए होड़ लगी रहती थी। इससे क्षेत्रीय शक्तियों के बीच तनाव पैदा हुआ और अंतत: इनमें से कोई किसी पर वर्चस्व स्थापित न कर सका। क्षेत्रीय शक्तियों के बीच एकता न रहने से बाहरी शक्तियों को भारत में पैर जमाने का मौका मिल गया।

बोध प्रश्न 2

1) 18वीं शताब्दी के आरंभ में स्वायत्त राज्यों के उदय की पद्धति का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

2) 18वीं शताब्दी के आरंभ में क्षेत्रीय राजनीति की प्रकृति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

....

....

....

....

....

36.7 सारांश

इस इकाई में अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में क्षेत्रीय शक्तियों के उदय पर प्रकाश डाला गया है। इस प्रक्रिया को समझने के लिए पहले हमने मुगल साम्राज्य के पतन से उत्पन्न स्थिति पर विचार किया। इसके बाद उत्तराधिकारी राज्यों, नये राज्यों और स्वतंत्र राज्यों के अधीन क्षेत्रीय राज्यों की तीन श्रेणियों पर विचार किया गया। इन राज्यों ने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की पर वे मुगल सत्ता से पूर्णत: अपना संबंध विच्छेद न कर सके। अत: ये क्षेत्रीय राज्य अखिल भारतीय स्तर पर एक ऐसी नई राजनैतिक व्यवस्था का निर्माण न कर सके जो मुगल व्यवस्था का विकल्प बन सके। यूरोपीय शक्तियों ने इस कमजोरी का फायदा उठाकर भारत में अपने पैर जमा लिए।

36.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) 4, ii) 5, iii) 1, iv) 3, v) 2.
2) देखिए उपभाग 36.4.1, 36.4.2

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 36.2, 36.3, 36.4, 36.5 बताइए कि क्षेत्रीय राजनैतिक शक्तियों का उदय एक समान नहीं हुआ। कुछ उत्तराधिकारी राज्य थे, और कुछ बिल्कुल स्वतंत्र रूप में उदित हुए।
2) भाग 36.6 पढ़िए। क्षेत्रीय राजनैतिक व्यवस्था की मूलभूत विशेषताओं पर विचार कीजिए और यह बताइए कि यह केन्द्र की प्रकृति से किस हद तक मिलती थी।